अक्टूबर : 2023

वर्ष : 7 अंक : 1

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"" चुनौतियां जीवन को अधिक रुचिकर बनाती है; और उन्हें दूर करना जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है। "

जोशुआ मैरिन

सर्वप्रथम आप सभी को गांधी जयंती, दुर्गापूजा और दशहरा की हार्दिक शुभकामनाएँ...

संस्थान के मासिक न्यूजलेटर के इस अंक में सितंबर, 2023 की संस्थान गतिविधियों और कार्यक्रमों के साथ हिन्दी सप्ताह 2023 की झलकियां प्रस्तुत है।

संस्थान और अधीनस्थ केंद्रों में दिनांक 14-20 सितंबर 2023 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन की दिशा में कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान कर्मियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और पुरस्कृत हुए।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में संस्थान की गतिविधियां और उपलब्धियां

संस्थान राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार, हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने, विभागीय काम-काज सुगमतापूर्वक सम्पादित करने हेतु सतत प्रयत्नशील है। संस्थान के वैज्ञानिक अपने शोध और पत्रों, लेखों को विभिन्न शोध पत्रिकाओं के साथ हिंदी में बुलेटिन, पुस्तके, लीफलेट आदि प्रकाशित करते हैं। वे भारत के विभिन्न भागों में हिंदी संगोष्ठि में भाग लेते है तथा अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत करते हैं। संस्थान के पुस्तकालय में उच्च कोटि की करीब 2500 हिंदी पुस्तकें उपलब्ध है। संस्थान के हिंदी में भी अनेक प्रकाशन हैं। संस्थान ने अपनी पहली वार्षिक गृह-पत्रिका 'नीलांजलि' का प्रकाशन वर्ष 2010 से प्रारंभ किया गया।

हिंदी कार्यशाला

संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है। ये कार्यशालाएं अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की जाती है। इन कार्याशालाओं में अतिथि वक्ता के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारियों को आमंत्रित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन कार्यशालाओं में संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा रोजमर्रा के कार्यों के संबंध में जानकारी दी जाती है। संस्थान सदस्यों को हिंदी माध्यम से प्रशासनिक नियमों-विनियमों की जानकारी देने के लिए समय-समय पर प्राध्यापकों को आमंत्रित किया जाता है। कार्यशाला में हिंदी वर्णमाला का मानकीकरण तथा हिंदी व्याकरण पर प्रकाश डाला गया तथा हिंदी काम में आनेवाली रूकावटों का समाधान, भाषा के प्रयोग में शब्दों का चयन एवं प्रयोग विधि पर भी प्रकाश डाला गया।

संस्थान द्वारा हिंदी में वैज्ञानिक संगोष्ठि /कार्यशाला

संस्थान मुख्यालय में वैज्ञानिक संगोष्ठि और कार्यशाला का अयोजन किया गया जिनमें मात्स्यिकी संस्थानों के अलावा अन्य संगठनों के विषेशज्ञों ने भाग लिया। इनके तकनीकी सत्रों के दौरान बड़ी संख्या में शोध और लोकप्रिय लेखों को प्राप्त किया गया।

दिनांक 29-30 जुलाई 2022 के दौरान भारतीय विज्ञान काँग्रेस संस्था की सानिध्य में संस्थान ने आज़ादी का अमृत महोत्सव वर्ष में हिन्दी कार्यशाला, "स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास" का आयोजन किया।

पुस्तकें

- अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी की वर्तमान अवस्था एवं सम्भावनाएं

- जीविकोपार्जन में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका
- समाजिक उत्थान में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की महत्ता
- मात्स्यिकी वर्धन में जलीय पारिस्थतिकी का योगदान
- अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी : संरक्षण, संवर्धन एवं जीविकोपार्जन
- अलवरण जल और मत्स्य-पारिस्थितिकी
- मत्स्य संपदा योजना के तहत अन्तर्स्थलीय खुलाजल विकास हेतु कार्य योजना 2021
- अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि

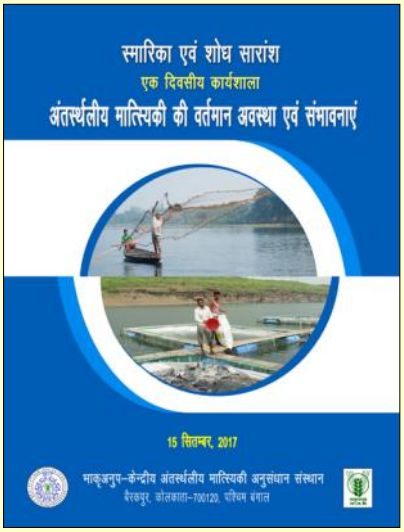

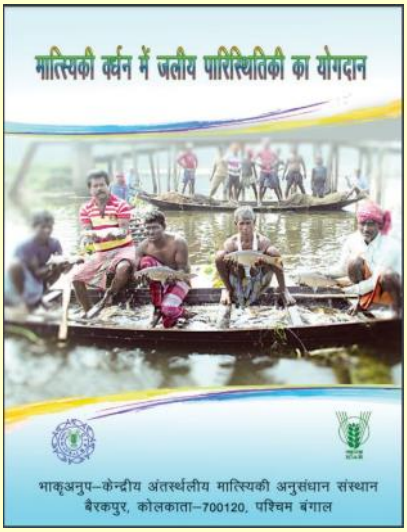

लिफलेट / पैम्फलेट

- ई-डास : इलेक्ट्रॉनिक आंकड़ा संकलन प्रणाली (हिंदी में)
- अन्तर्स्थलीय खुला जलीय संसाधनों में पिंजरों में पंगास (पंगेशियानोडोन हाइपोथेलमस) मछली पालन पद्धति ।
- राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित परियोजना, "बिहार के गोखुर झीलों में सामुदायिक सहभागिता आधारित प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन द्वारा मात्स्यिकी संवर्धन : एक नई पहल"

विडियो :

- संस्थान की निक्रा परियोजना पर "जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निबटने हेतु बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्रों में पेन में मछली पालन
- ओड़ीशा के सालिया बांध में पिंजरें में मछली पालन
- गंगा नदी में जैव विविधता पुनर्स्थापन हेतु वाइल्ड मछलियों का जर्मप्लाज्म प्रजनन
- अंतर्स्थलीय जलक्षेत्रों के पिंजरे में मछली पालन हेतु प्रजाति विविधता

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की पत्रिका, 'खेती' के मात्स्यिकी विशेषांक में प्रकाशित प्रचलित लेख :

थैंकम थेरेसा पॉल, प्रीथा पणिक्कर, बि. के. दास, यू. के. सरकार और सुनीता प्रसाद, 2020 - वेम्बानाड झील में काली सीपी का पेन में पालन: जलवायु तन्यक उत्पादन संवर्धन प्रणाली। खेती (मात्स्यिकी विषेशांक), वर्षः 73, अंकः 8, जनवरी 2021, पृष्ठ सं. 15-17।

गुंजन कर्नाटक, बसंत कुमार दास, उत्तम कुमार सरकार, मिशाल पी. और सुनीता प्रसाद, 2020 - लेबीयो बाटा - जलाशयों एवं आर्द्रक्षेत्रों में पिंजरा पालन में प्रजाति विविधीकरण हेतु एक संभावित प्रजाति। खेती (मात्स्यिकी विषेशांक), वर्षः 73, अंकः 8, जनवरी 2021, पृष्ठ सं. 20-21

एच. एस. स्वैन, एम.एच. रामटेके, ए. उपाध्याय, डी.के. मीना, बि. के. दास और सुनीता प्रसाद, 2020 - पिंजरों में बायोफाऊलिंग नियंत्रण के लिए शाकाहारी मछली प्रजातियों का पालन। खेती (मात्स्यिकी विषेशांक), वर्षः 73, अंकः 8, जनवरी 2021, पृष्ठ सं. 34-35

बि. के. दास और सुनीता प्रसाद – अन्तर्स्थलीय खुलाजल मात्स्यिकी विकास। खेती - वर्षः 74, अंकः 04, अगस्त 2021, पृष्ठ सं. 38-43

एम. ए. हसन, बसंत कुमार दास, लियनथुआमलु आईएआईअल, राजू बैठा और गणेश चंद्र, 2022-आर्द्र क्षेत्रों में मात्स्यिकी संवर्धन : खेती, फरवरी 2023, पृष्ठ सं. 24-26 ।

देशव्यापी कोरोना महामारी (कोविड 19) संबंधी दिशानिर्देश

- नदी, ज्वारनदमुख, मुहाने और नहर क्षेत्र पर निर्भरशील मछुआरों के लिए परामर्शी दिशानिर्देश
- आर्द्रक्षेत्र और जलाशयों पर निर्भरशील मछुआरों के लिए परामर्शी दिशानिर्देश

संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन – द्विभाषी रूप में (हिन्दी एवं अंग्रेजी)

संस्थान का छमाही (हिन्दी एवं अंग्रेजी)

हिन्दी मासिक न्यूजलेटर- संस्थान में छमाही न्यूजलेटर (द्विभाषी) के साथ पूर्ण रूप हिंदी में प्रति माह 'सिफरी मासिक समाचार' का प्रकाशन अक्तूबर 2017 से लगातार किया जा रहा है।

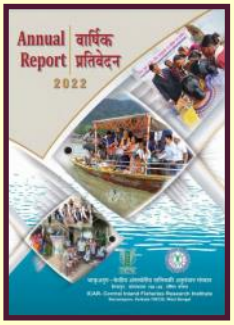

गृह-पत्रिका नीलांजलि -

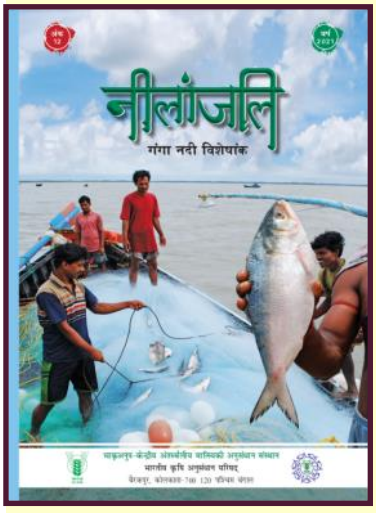

राजभाषा के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुए संस्थान के हिंदी कक्ष द्वारा वर्ष 2010 से वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'नीलांजलि' का प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका का प्रकाशन तत्कालीन निदेशक डा. अनिल प्रकाश शर्मा के मार्गदर्शन एवं सहयोग में प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका की परिकल्पना एवं इसके मूर्त रूप को साकार करने का श्रेय संस्थान के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं संस्थान में विविध हिन्दी कार्यकलापों के पथप्रदर्शक, डा.नर्वदा प्रसाद श्रीवास्तव को जाता है। 'नीलांजलि' में सामाजिक, समसामयिक, विज्ञान, कृषि विज्ञान, मात्स्यिकी आदि विषयों के लेख, कवितायें, वैज्ञानिकों, प्रोफेसर, छात्रों, लेखको, संस्थान के कर्मचारियों द्वारा प्रकाशित की जाती है। संस्थान से प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका ''नीलांजलि'' को वर्ष (2016-2017) के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, दिल्ली, द्वारा दिया जाने वाला ''गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका पुरस्कार'' (प्रथम पुरस्कार) मिला। यह पुरस्कार हिंदी पत्रिका ''नीलांजलि'' को दूसरी बार प्राप्त हुआ है। 'नीलांजलि' ने वर्ष 2011 और 2017 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के ''गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका प्रथम पुरस्कार'' प्राप्त किया था। वर्ष 2020 के लिये इस पत्रिका को ''गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका प्रोत्साहन पुरस्कार'' दिया गया है।

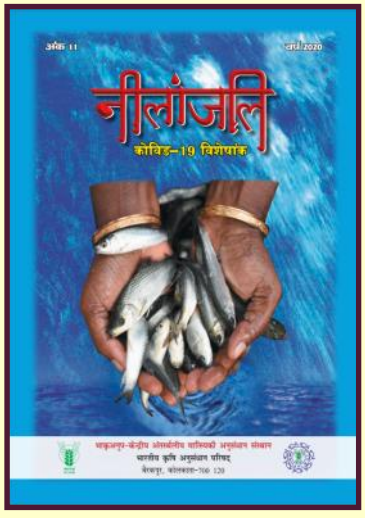

'नीलांजलि' पत्रिका को पद्श्री एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त विश्व प्रसिद्ध बंगला लेखिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता, स्व. महाश्वेता देवी ने भी सराहा था।

संस्थान एवं इसके क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में संसदीय राजभाषा समिति का आगमन

- दिनांक 26 फरवरी, 2019 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, प्रयागराज का राजभाषा अनुपालन संबंधी निरीक्षण
- दिनांक 27 फरवरी, 2020 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, वडोडरा का राजभाषा अनुपालन संबंधी निरीक्षण
- दिनांक 22 नवम्बर 2021 संसदीय राजभाषा की दूसरी उप समिति द्वारा संस्थान मुख्यालय बैरकपुर, कोलकाता का राजभाषा अनुपालन संबंधी निरीक्षण

पश्चिम बंगाल के चामता आद्रभूमि में मत्स्य पालन के माध्यम से अनसुचित जाति समुदाय को सशक्त बनाने के लिए सहयोग

आईसीएआर-सिफरी ने पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना में चामता आद्रभूमि के अनसुचित जाति समुदाय को अपना सहयोग किया है, जिसका लक्ष्य उन्हें इन-सीटू मछली बीज उगाने और मत्स्य पालन-आधारित मत्स्य पालन के माध्यम से अपनी आजीविका बनाए रखने में मदद करना है। 1 सितंबर, 2023 को, आईसीएआर-सिफरी ने मत्स्य पोनो को बढ़ाने के लिए तीन एचडीपीई पेन प्रदान किए, जो उन्हें स्टॉकिंग उद्देश्यों के लिए मत्स्य बीज (उन्नत फिंगरलिंग) की मांग को पूरा करने में मदद करेंगे। हाल ही में, आईसीएआर-सिफरी ने आर्द्रभूमि में घेरे के माध्यम से इन-सीटू मछली बीज उगाने को प्रदर्शित करने के लिए पहले ही विभिन्न मत्स्य पालन उपकरणों की आपूर्ति की थी। घेरे में मत्स्य पालन के प्रदर्शन ने स्थानीय मछुआरों को प्रेरित किया है, जो अब सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मोड के माध्यम से लागू करने में रुचि रखते हैं। इस पहल के तहत, लाभार्थी घेरों में बीज उगाने के लिए मछली के बीज खरीदेंगे, जिससे अंततः आर्द्रभूमि में मछली उत्पादन में वृद्धि होगी। संस्थान के

निदेशक डॉ. बि. के. दास ने अनुसूचितजाति एवं जनजाति योजना के हिस्से के रूप में एचडीपीई पेन वितरित किए। वितरण कार्यक्रम का समन्वय संस्थान के निदेशक के मार्गदर्शन में सुश्री संगीता चक्रवर्ती (टी-3) और श्री कौशिक मंडल (टी-3) की सहायता से वैज्ञानिक डॉ. लियानथुआमलुइया द्वारा किया गया। संस्थान और स्थानीय मछुआरों की यह संयुक्त पहल स्थायी मत्स्य पालन सुनिश्चित करने और स्थानीय मछुआरों की आजीविका बढ़ाने की दिशा में एक उत्साहजनक कदम है।

भारत सरकार की ग्रामीण विकास और उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री माननीया साध्वी निरंजन ज्योति ने किया आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर का दौरा

भारत सरकार की ग्रामीण विकास और उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री, माननीया साध्वी निरंजन ज्योति ने आज 05 सितंबर 2023 को आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर का दौरा किया।

संस्थान के कार्यभारी निदेशक ने उन्हें संस्थान की उपलब्धि और भारत के मछुआरों के लिए आईसीएआर-सिफ़री द्वारा किए गए कार्यों के प्रभाव के बारे में जानकारी दी। माननीय मंत्री ने भारत में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए आईसीएआर-सिफ़री के प्रयासों की सराहना की।

यात्रा के दौरान, माननीय मंत्री ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं, सजावटी मछली इकाई और अन्य प्रायोगिक इकाइयों का दौरा किया और समाज की भलाई के लिए संस्थान द्वारा किए गए कार्यों और गतिविधियों के बारे में वैज्ञानिकों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बातचीत की। माननीय मंत्री ने भारत के विभिन्न राज्यों में मत्स्य पालन के माध्यम से ग्रामीण समुदायों की आजीविका बढ़ाने पर किए गए कार्यों के लिए संस्थान के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को बधाई दी।

सिफरी द्वारा डलमऊ में एक लाख मछली को गंगा नदी में छोड़ा गया

राष्ट्रीय नदी रैंचिंग कार्यक्रम 2023 के अवसर पर गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा आज दिनांक 08 सितम्बर 2023 को, डलमऊ में गंगा नदी में 100000 (एक लाख) भारतीय प्रमुख कार्प-कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग सह जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के प्रभारी डॉ॰ धर्म नाथ झा, ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। उन्होने कहा कि इस वर्ष पुरे गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियो के 30 लाख से ज्यादा बीज का रैंचिंग हुआ है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती निर्मला पासवान, माननीया विधायक (विधान परिषद सदस्य), उत्तर प्रदेश, ने इस अवसर पर गंगा को स्वच्छ रखने एवम जैव विविधता को बचाने के लिए उपस्थित लोगों से आह्वान किया । इस अवसर पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ यू के सरकार, निदेशक, आई.सी.ए.आर. -एन.बी.एफ.जी.आर., लखनऊ ने सभा में उपस्थित मछुआरों को संबोधित करते हुए मछुआरों और गंगा नदी के लिए मछलियों के महत्व को बताया तथा छोटे मछलियों को पकड़ने से माना किया । कार्यक्रम

में रायबरेली जनपद के सहायक मत्स्य निदेशक श्रीमती सुनीता वर्मा ने कहा कि मछलियों को बचाने में मछुआरों का योगदान महत्वपूर्ण है और गंगा नदी में मत्स्य विविधता बढ़ाने में वे कैसे सहयोग दे सकते हैं बताया। श्री राजेश शर्मा, सह संयोजक गंगा विचार मंच, काशी

प्रान्त, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी साथ ही लोगो को गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प दिलाया। डॉ॰ अवसार आलम, वैज्ञानिका ने जैव विविधता और मछलियों के बारे में जागरूक किया तथा गंगा को साफ रखने के लिए कहा। कार्यक्रम में आस-पास गाव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया। अन्त में संस्थान के वैज्ञानिक डा॰ वी आर ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आस्वस्त किया कि समाज के भगीदारी से हम इस परियोजना के उद्देष्यों को पाने में सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्रम में संस्थान के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया और सभा को सम्बोधित किया।

संस्थान, के क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 14 सितंबर 2023 को "देश के विकास में राजभाषा की भूमिका" पर एक कार्यशाला आयोजन किया

हिंदी सप्ताह समारोह के एक भाग के रूप में,संस्थान के , क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के मार्गदर्शन में "देश के विकास में राजभाषा की भूमिका" पर एक कार्यशाला आयोजित की। सुश्री जेसना पी.के. ने सभा में सभी का स्वागत किया। डॉ. प्रीता पणिक्कर ने परिचयात्मक टिप्पणियों पर विचार-विमर्श किया और कार्यालय में हिंदी भाषा के कार्यान्वयन के महत्व पर जोर दिया। मुख्य अतिथि, श्री अजय श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त), हिंदी शिक्षण योजना, बैंगलोर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने भाषण दिया और प्रतिभागियों को देश के विकास में हिंदी भाषा के इतिहास और महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. हेमाप्रशांत, प्रभारी अधिकारी, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, आईसीएआर-सीआईएफए, बैंगलोर ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। वैज्ञानिक डॉ. सोनालिका साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वयन डॉ. प्रीता पणिक्कर, सुश्री जेसना पी.के. और डॉ. सोनालिका साहू द्वारा किया गया।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 14 सितंबर हिन्दी दिवस के सुवसर पर शुरू हुआ हिन्दी सप्ताह। कार्यक्रम में मुख्यालय बैरकपुर के साथ सभी क्षेत्रीय केंद्र ऑनलाइन मोड से जुड़े हुए थे। कार्यक्रम की शुरुवात वैज्ञानिक श्री

संजीव कुमार साहू ने सभी का स्वागत करते हुए किया। सभी ने राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण किया । गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र से मुख्य अतिथि डॉ पुनीत कुमार सिंह, अनुसंधान अधिकारी, केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, सी.सी.आर.ए.एस., आयुष मंत्रालय ने अपना वक्तव्य रखा। उन्होंने हिन्दी दिवस का परिचय देने हुए बताया की हिन्दी का प्रचार-प्रसार सिर्फ केन्द्रीय सरकार का नहीं हमारा भी दायित्व है। हिन्दी के प्रति समर्पित होने के लिए उन्होंने सभी से अनुरोध किया । 'समर्थन से ही समर्पण की भावना उत्पन्न होती है' ऐसा उनका मानना था । सारे क्षेत्रीय केंद्रों के प्रभारी और केंद्र प्रमुख ने इस अवसर पर अपने विचार रखें । मुख्यालय से प्रभागाध्यक्षों ने अपने विचार सांझा किए । संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री कुमार विवेक ने हिन्दी को प्रगामी रूप से अपनाने की बात कही। संस्थान के कार्यभारी निदेशक और हिन्दी के सर्वकार्यभारी अधिकारी डॉ. श्रीकांत सामंता ने सभी हिन्दी में कार्यरत अधिकारियों को बधाई दी और संस्थान में हिन्दी में हो रहें कार्य का विवरण दिया । उन्होनें संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास को धन्यवाद दिया जिनकी प्रेरणा और उत्साह से संस्थान हिन्दी में कार्यशाला, डाक्यूमेंट्री, आदि कर

रहा हैं, पुस्तकों का प्रकाशन कर रहा हैं और गांधीजी के दिखाए हुए कदमों पे चलते हुए हिन्दी जो की जनमानस की भाषा है उसका प्रसार कर रहा हैं । कार्यक्रम में 'अगस्त 2023' के हिन्दी मासिक समाचार पत्र "सिफरी मासिक समाचार" का विमोचन किया गया । कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा किया गया। वैज्ञानिक श्री प्रवीण मौर्य के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

सजावटी मछली पालन के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए आईसीएआर-सिफरी की पहल

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने आर्थिक स्थिरता के लिए 28 अनुसूचित जाति की महिलाओं को सजावटी मछली पालन इनपुट जिसमें 400 लीटर क्षमता वाले सिफरी मॉडल एफ.आर.पी. टैंक शामिल हैं दिये| इन एफ.आर.पी. टैंकोंमें दो कक्षों के साथ एक ही टैंक में प्रजनन संचालन का प्रावधान है, सजावटी किट जिसमें सामान के साथ सजावटी लाइव बियरर मछली की प्रजातियाँ, एरेटर, थर्मोस्टेट, फ़ीड, हैंड नेट, एक्वा हेल्थ केयर रसायन आदि शामिल हैं। सिफरी ने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में बालागढ़ ब्लॉक की महिला लाभार्थियों को हैंड होल्डिंग प्रदर्शन प्रदान संस्थान द्वारा निष्पादित एससीएसपी परियोजना द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने हुगली के इस हिस्से में मछुआरे महिलाओं को पंडित विद्यासागर, राजा राममोहन राय द्वारा जिन्होंने महिलाओं की आवाज को बुलंद करने और उनके सशक्तिकरण की दिशा में किये गये कार्य द्वारा महिला सशक्तिकरण के आह्वान की याद दिलाई। डॉ. दास ने दोहराया कि अगर हमारे समाज में महिलाएं सामाजिक, आर्थिक और ज्ञान की दृष्टि से सशक्त होंगी तो पूरा समाज उन्नत होगा। संस्थान पिछले कई वर्षों से आवश्यकता आधारित इनपुट और ज्ञान समर्थन के साथ विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से ग्रामीण दलित महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बनाए रखने के इस प्रयास में उत्साहपूर्वक शामिल रहा है।

कार्यक्रम में शिवहर जिले, बिहार के 30 प्रशिक्षु मछली किसानों के अलावा बालागढ़ में कार्यरत एफसीएस के तहत कई मछुआरों ने भी भाग लिया, जो बहुत प्रमुख परियोजना एनएमसीजी जैसी विभिन्न परियोजना गतिविधियों से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर रहे हैं। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक. ए.के. दास ने महिलाओं को प्रोत्साहित किया और उनसे ऐसे कार्यक्रमों से लाभ उठाने का आग्रह किया ताकि वे सामान्य रूप से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता अर्जित कर सकें। संस्थान की शोधकर्ता डॉ श्रेया भट्टाचार्य ने उन्हें प्रदान की गई किट वस्तुओं का उपयोग करके सजावटी मछली पालन तकनीकों का प्रदर्शन कर समझाया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह 2023 का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह दिनांक 14 से 20 सितंबर 2023 के बीच आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर 2023 को संस्थान मुख्यालय में ऑफ़लाइन तथा ऑनलाइन दोनों ही मोड में किया गया,जिसमें संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों ने ऑनलाइन मोड में भाग लिया। इस समारोह का शुभारंभ स्वागत सम्बोधन के साथ किया गया जिसमें उन्होंने संविधान सभा द्वारा राजभाषा हिन्दी की स्वीकृति तथा अनुमोदन के पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। इसके बाद, राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई। आगे संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों और क्षेत्रीय केंद्र प्रमुखों ने अपने-अपने विचार साझा किए। प्रभारी निदेशक तथा सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष, डा. श्रीकान्त सामन्ता ने राजभाषा हिन्दी के कार्यकलापों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की शुरुआत वैज्ञानिक श्री संजीव कुमार साहू ने सभी का स्वागत करते हुए किया। सभी ने राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण किया । गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र से मुख्य अतिथि डॉ पुनीत कुमार सिंह,

अनुसंधान अधिकारी, केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, सी.सी.आर.ए.एस., आयुष मंत्रालय ने अपना वक्तव्य रखा। उन्होंने हिन्दी दिवस का परिचय देने हुए बताया कि हिन्दी का प्रचार-प्रसार सिर्फ केन्द्रीय सरकार का नहीं हमारा भी दायित्व है। हिन्दी के प्रति समर्पित होने के लिए उन्होंने सभी से अनुरोध किया । 'समर्थन से ही समर्पण की भावना उत्पन्न होती है' ऐसा उनका मानना था । संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री कुमार विवेक ने हिन्दी को प्रगामी रूप से अपनाने की बात कही। कार्यक्रम में 'अगस्त 2023' के हिन्दी मासिक समाचार पत्र "सिफरी मासिक समाचार" का विमोचन किया गया ।

संस्थान में हिन्दी सप्ताह के दौरान कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 14 सितंबर 2023 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता से शुभारंभ किया गया। इसके बाद दिनांक 15 सितंबर 2023 को अंकन एवं स्लोगन कविता पाठ; 18 सितंबर 2023 को आशुभाषण प्रतियोगिता और हिन्दी अनुवाद; दिनांक 19 सितंबर 2023 को कार्य समीक्षा और क्विज (प्रश्नोत्तरी)। ये प्रतियोगितायें दो वर्गों में आयोजित की गईं- हिन्दी भाषी तथा हिंदीतर भाषी

हिन्दी सप्ताह का समापन, 20 सितंबर 2023 को किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास ने हिन्दी सप्ताह के सफल संचालन के लिए परिचालन समिति को धन्यवाद दिया साथ ही उन्होंने गृह पत्रिका, नीलांजलि को विषय संदर्भित बनाने पर जोर दिया जिससे किसी महत्वपूर्ण मुद्दे से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर ध्यानाकर्षण किया जा सके। इस अवसर पार संस्थान के प्रभागाध्यक्षों ने अपने वक्तव्य में हिन्दी को संपर्क भाषा के तौर पर भाषित किया और कहा कि मछुआरों से संवाद में हिन्दी का विशेष महत्व है इस समारोह के मुख्य अतिथि, डा सत्य प्रकाश तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी), शिबपुर दीनबंधु कॉलेज, हावड़ा, पश्चिम बंगाल ने हिन्दी सप्ताह 2023 ने नीलांजलि पत्रिका से अपने जुड़ाव की चर्चा की और इसकी सराहना की। समापन समारोह में मासिक हिन्दी न्यूजलेटर, सितंबर 2023 का विमोचन किया गया और प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिया गया। हिन्दी सप्ताह 2023 का सफल कार्यान्वयन संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास के मार्गदर्शन में डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष; श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक; श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक; डा. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक; सुश्री सुनीता प्रसाद, स.मु.तक.अधि. (हिन्दी) तथा श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक (हिन्दी) द्वारा किया गया।

पाकुड़, झारखंड के मछली किसानों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम: आईसीएआर-सिफरी की पहल

नीली अर्थव्यवस्था की बढ़ती मांग और किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य के साथ, सरकार एटीएमए जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से मछुआरों के लिए प्रशिक्षण सह कौशल वृद्धि कार्यक्रम प्रायोजित कर रही है। इस संबंध में, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 18 से 22 सितंबर, 2023 तक पाकुड़, झारखंड के मछली किसानों के लिए "अंतर्स्थलीयमत्स्य प्रबंधन" पर एटीएमए-प्रायोजित 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कुल 21 किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम में पाकुड़ जिले से 6 महिलाओं के समूह और एक मत्स्य प्रशिक्षक ने भाग लिया है। झारखंड राज्य के केंद्र में स्थित पाकुड़ जिला जंगल और पहाड़ी इलाकों से घिरा हुआ है। जिला पोर्टल के अनुसार, यह जिला दो बांधों और तालाबों और टैंकों जैसे कई छोटे जल निकायों से समृद्ध है। यह प्रशिक्षण वैज्ञानिक मछली पालन पर किसानों का ज्ञान बढ़ाने के लिए आयोजित किया गया था। प्रशिक्षुओं को मछली पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे तालाब निर्माण और प्रबंधन, अंतर्स्थलीय खुले पानी में प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, मछली चारा तैयार करना, समग्र मछली संस्कृति, सजावटी मछली संस्कृति आदि सिखाया गया। इसके अलावा, प्रशिक्षुओं को एक प्रदर्शन भी दिया गया इस प्रशिक्षण के दौरान सजावटी मछली पालन, मछली फ़ीड की तैयारी, कुछ बुनियादी पानी की गुणवत्ता की निगरानी और कुछ रोग पैदा करने वाले मछली रोगजनकों की पहचान पर व्यावहारिक अभिविन्यास। प्रशिक्षुओं को जलाशय में मत्स्य पालन प्रबंधन, बाड़े की संस्कृति और पंगस संस्कृति के कुछ बुनियादी ज्ञान से भी अवगत कराया गया क्योंकि पाकुड़ जिले को भी दो का आशीर्वाद प्राप्त है। इसके अलावा, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड और आईसीएआर-सीआईएफई, कोलकाता अनुसंधान केंद्र के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में एक फील्ड यात्रा का आयोजन किया गया था। प्रशिक्षण

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने किसानों से बातचीत की और उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से अपना ज्ञान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. दास ने आजीविका में सुधार के लिए मत्स्य पालन के माध्यम से घर के पिछवाड़े के तालाबों सहित कम उपयोग किए जाने वाले जल संसाधनों का उपयोग करने पर जोर दिया। यह कार्यक्रम कक्षा सत्रों के अलावा ऑन-फील्ड एक्सपोजर विजिट और फील्ड प्रदर्शनों के माध्यम से तालाबों और टैंकों सहित खुले पानी में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों के व्यावहारिक कौशल को मजबूत करने के लिए उन्मुख है। लगभग 86% प्रशिक्षुओं

आईसीएआर-सिफ़री ने छत्तीसगढ़ के मत्स्य पालन विभाग के लिए मछली पकड़ने का आकलन सर्वेक्षण सॉफ्टवेयर तैयार किया

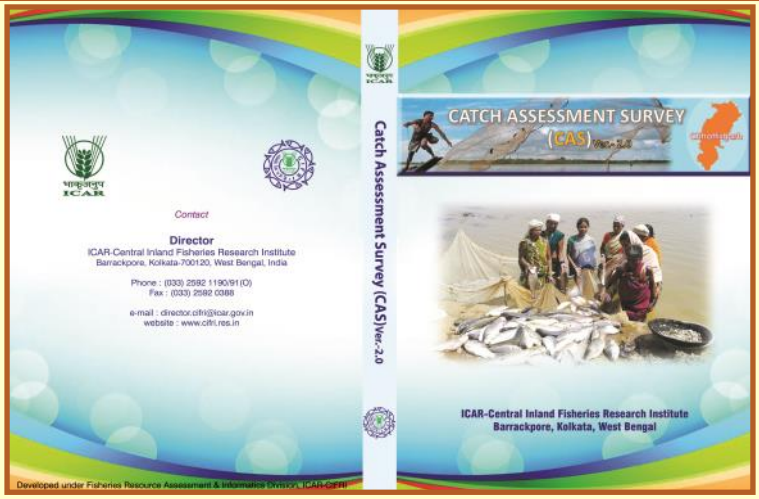

छत्तीसगढ़ के मत्स्य पालन विभाग ने भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी), पंगास, तिलापिया और झींगा प्रजातियों के लिए 10 हेक्टेयर से कम जल निकायों में मछली पकड़ने के आकलन के लिए एक सॉफ्टवेयर विकसित करने के लिए आईसीएआर-सिफ़री से संपर्क किया और उसे आउटसोर्स किया। यह सॉफ्टवेयर विशेष रूप से उनकी आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किया गया। आईसीएआर-सिफ़री ने सफलतापूर्वक सॉफ्टवेयर विकसित किया, जिसे सीएएस (CAS ver 2.0), नाम दिया गया। ग्राहक की जरूरतों को पूरा करने के लिए भागीदारी मोड में इसे विकसित किया गया। 20 सितंबर 2023 को आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने सीएएस संस्करण (CAS ver 2.0), को श्री वाई.पी. सिंह, सहायक सांख्यिकी अधिकारी, छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग के प्रतिनिधि को यह हस्तांतरित कर दिया । इस सॉफ्टवेयर को विकसित करने वाले टीम के सदस्य -डॉ. मलय नस्कर (प्रधान वैज्ञानिक), सुश्री चायना जाना (वैज्ञानिक), श्री एस.के. साहू (वैज्ञानिक) और मोहम्मद नईम (तकनीकी सहायक), और डॉ. श्रीकांत सामंत, प्रमुख, मत्स्य संसाधन मूल्यांकन और सूचना विज्ञान इस अवसर पर उपस्थित थे।

आईसीएआर-सिफ़री ने "गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य पालन और संरक्षण पर हितधारक परामर्श सह सलाहकार कार्यशाला" का आयोजन किया

एनएमसीजी परियोजना के तहत 27 सितंबर 2023 को आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर में "गंगा नदी में हिलसा मत्स्य पालन और संरक्षण पर हितधारक परामर्श सह सलाहकार कार्यशाला" आयोजित की गई थी। कार्यशाला की शुरुआत एनएमसीजी परियोजना के सह- अन्वेषक (को –पीआई) डॉ. ए.के. साहू के स्वागत भाषण के साथ हुई। उन्होनें कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। सिफ़री के निदेशक और एनएमसीजी परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. बसंत कुमार दास ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में गंगा नदी में हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण के महत्व और 2018 से सिफ़री द्वारा किए गए वैज्ञानिक हस्तक्षेपों पर प्रकाश डाला। डॉ. संदीप कुमार बेहरा, सलाहकार, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी), श्री राजदीप मुखर्जी, नीति विश्लेषक, बीओबीपी-आईजीओ (बंगाल की खाड़ी) कार्यक्रम, श्री जी. सी. दास, वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (डब्ल्यूआईआई), डॉ. डी.के. डे, सिफ़री के सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. यू. भौमिक, सिफ़री के सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक और आरईएफ प्रभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, डॉ. सुब्रत दासगुप्ता, सिफ़री के सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. आशिम कुमार नाथ, एसबीकेयू विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग के प्रोफेसर, प्रोफेसर सुधीर कुमार दास, डब्ल्यूबीयूएएफएस, और डॉ. गायत्री त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफई विशेषज्ञ सदस्यों के रूप में इस अवसर पर उपस्थित थे। डॉ. संदीप बेहरा ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में 2018 से सिफ़री द्वारा किए गए हिल्सा मत्स्य पालन सुधार कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने फरक्का बैराज में मछली के संचालन की स्थिति को उन्नत करने के लिए मछली को लॉक गेट से अपस्ट्रीम की दिशा में गुजरने में अतिरिक्त सहायता प्रदान किए जाने की बात कहीं। इससे गंगा नदी में हिल्सा प्रवास बढ़ेगा।

सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने पिछले 3 वर्षों से एनएमसीजी हिल्सा परियोजना (घटक II) के तहत किए गए कार्यों की एक संक्षिप्त प्रस्तुति के साथ कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रेजेंटेशन में उन्होंने परियोजना के उद्देश्यों, परियोजना के तहत

महत्वपूर्ण गतिविधियों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने बताया कि गंगा नदी के मध्य खंड में हिल्सा स्टॉक को बढ़ाने के उद्देश्य से फरक्का बैराज के ऊपरी प्रवाह में 90,000 से अधिक हिल्सा को छोड़ा गया हैं। उन्होंने हिल्सा पालन प्रक्रिया, टैगिंग विधियों और अपस्ट्रीम में हिल्सा की पुनर्प्राप्ति के बारे में जानकारी दी। हिल्सा के प्रजनन को बढ़ाने के लिए अंडे और स्पॉन को भी नदी में प्रवाहित किया गया और हिल्सा की आबादी पर रैन्चिंग के प्रभाव को भी प्रस्तुत किया गया। डॉ. बि.के. दास ने हिल्सा के कैप्टिव प्रजनन और पालन के लिए परियोजना के तहत किए गए प्रयोगों को भी प्रस्तुत किया। गंगा नदी में हिल्सा की बहाली और संरक्षण और उनके पालन-पोषण से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों पर भी चर्चा की गई।

पैनल चर्चा के दौरान, विशेषज्ञ सदस्यों ने आईसीएआर-सिफ़री द्वारा विशेष रूप से रैन्चिंग कार्यक्रम के कारण प्रयागराज से फरक्का के बीच गंगा नदी के ऊपरी हिस्से में हिल्सा की पुन: उपस्थिति की सराहना की। उन्होंने हिल्सा प्रजनन स्थलों की पहचान करने और उन्हें विनाशकारी मछली पकड़ने से बचाने पर विस्तृत काम करने पर जोर दिया। हिलसा को पिंजरों और अन्य प्रणालियों के तहत बंध जगहों में पालन करने के तकनीकों पर अधिक शोध प्रयास करने की आवश्यकता हैं। उन्होंने गंगा नदी में हिल्सा के स्थायी प्रबंधन से संबंधित रणनीतियों और हिल्सा मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए राज्य सरकारों और अनुसंधान संगठन के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर भी चर्चा की। इसके अलावा, पीक सीज़न के दौरान छोटे जालीदार जालों का उपयोग न करना, अवैध मछली पकड़ने पर रोक और ब्रूडर संग्रह जैसी चुनौतियों को अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दों के रूप में बताया गया। गोधाखाली, डायमंड हार्बर के मछली किसानों/मछुआरों ने भी विशेषज्ञ सदस्यों के साथ बातचीत की और हिल्सा के कम उपलब्धता के बारे में चिंताएं व्यक्त की और भविष्य में सिफ़री से विस्तारित सहयोग के लिए सहमति व्यक्त की। अंत में, एनएमसीजी के सह-अन्वेषक डॉ. डी.के.मीना द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला औपचारिक रूप से समाप्त हो गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए. के. साहू, डॉ. डी.के.मीना, श्री संथाना कुमार और श्री मितेश रामटेके द्वारा किया गया। सिफ़री के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास की समग्र देखरेख में एनएमसीजी घटक II के अनुसंधान विद्वानों के सहयोग से यह कार्यशाला सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ।

आईसीएआर-सिफ़री ने "जलवायु परिवर्तन के कारण अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन की संवेदनशीलता" पर कार्यशाला आयोजित किया

25 सितंबर 2023 को आईसीएआर-सिफ़री, कोलकाता में निकरा (एनआईसीआरए) परियोजना के अंतर्गत "अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव और अनुकूली रणनीतियों का विकास" पर एक समापन कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की शुरुआत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अटारी कोलकाता के निदेशक डॉ. पी. दे के स्वागत के साथ हुई। अन्य सभी आमंत्रित विशेषज्ञों और मछली किसानों को संस्थान के निदेशक और निकरा परियोजना के प्रमुख अन्वेषक (पी. आई) डॉ. बि .के. दास द्वारा स्वागत किया गया। निदेशक डॉ. बि .के. दास ने 12 वर्षों के इस परियोजना के विभिन्न चरणों के संक्षिप्त विवरण के साथ कार्यशाला के उद्देश्य को रेखांकित किया। उनकी प्रस्तुति में परियोजना के उद्देश्यों, इसके महत्व और परियोजना के तहत विभिन्न गतिविधियों और प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन में आने वाले जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दों पर विचार किया गया। विचारित मुद्दे थे - देश भर में भारतीय नदियों, बाढ़ के मैदानी आर्द्रभूमियों और तटीय आर्द्रभूमियों में प्रजनन प्रजातियों और हितधारकों के रूप में भेद्यता का आकलन किया गया। अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के खिलाफ अनुकूलन शमन रणनीतियों को विभिन्न अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में सफलतापूर्वक विकसित और प्रदर्शित किया गया। बाढ़ के मैदानी आर्द्रभूमि की कार्बन पृथक्करण क्षमता और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का आकलन किया गया।

मुख्य अतिथि अटारी कोलकाता के निदेशक डॉ. पी. दे, और सम्मानित अतिथि कल्याणी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के प्रोफेसर बी.बी. जना ने अन्तर्स्थलीय खुले पानी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर सिफ़री द्वारा किए गए सराहनीय कार्य की सराहना की। डॉ. दे ने कहा, "अब हम भारी जलवायु परिवर्तन के कारण छठी प्रजाति के विलुप्त होने की घटना के करीब हैं, और इसलिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में जलवायु संबंधी अध्ययनों को मजबूत किया जाना चाहिए और प्रजनन बिंदु के लिए मछलियों की प्रजनन भेद्यता और प्रजनन फेनोलॉजी का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।" डॉ. जाना के अनुसार, सिफ़री को पर्यावरणीय अणुओं के

स्थिर आइसोटोप विश्लेषण जैसी नवीनतम तकनीकों के समावेश के साथ अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन से संबंधित जलवायु संबंधी कार्य जारी रखना चाहिए।

कार्यशाला के दौरान पैनल चर्चा आयोजित की गई जहां कल्याणी विश्वविद्यालय, बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय और केंद्रीय मत्स्य पालन शिक्षा संस्थान, कोलकाता के आमंत्रित विशेषज्ञों ने परियोजनाओं की उपलब्धियों की सराहना की और अनुसंधान के आउटपुट को तैयार करने के लिए अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने से संबंधित नीति पर अपने सुझाव दिए। सभी विशेषज्ञ कार्बन सीक्वेस्ट्रिंग (पृथक्करण) और जलवायु भेद्यता मानचित्रण पर सिफ़री द्वारा किए गए काम से बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने सोर्स -सिंक गतिशीलता को शामिल करते हुए भारत की आर्द्रभूमि की कार्बन सीक्वेस्ट्रिंग (पृथक्करण) क्षमता पर और विस्तृत कार्य करने पर जोर दिया और सिफ़री द्वारा विकसित मौजूदा ढांचे का उपयोग करके राज्य-वार विस्तृत भेद्यता मानचित्र बनाने का सुझाव दिया। इसके अलावा, तटीय मछुआरों की आजीविका के उत्थान के लिए सिफ़री द्वारा की गई पहल को प्रोत्साहित किया और सुदूर तटीय क्षेत्रों के मछली किसानों/मछुआरों में 'जलवायु उन्मुख' मछली पालन प्रक्रियाओं के बारे में अधिक जागरूकता शामिल करने का सुझाव दिया । पैनल चर्चा के दौरान पश्चिम बंगाल के सुंदरबन, मुर्शिदाबाद, नादिया, उत्तर 24 परगना जिले के मछली किसानों ने आर्द्रभूमि मत्स्य पालन के लिए सिफ़री द्वारा दिखाए गए 'जलवायु उन्मुख' तकनीक अपनाते हुए काम करने के अपने अनुभव और संतुष्टि को सांझा किया और बताया कि यह उनके आय को दोगुना करने में कैसे सहायक हुआ हैं।

बैठक समापन टिप्पणियों के साथ संपन्न हुई, जिसमें आयोजन के महत्व, इसके प्रभाव और इसके माध्यम से बने रिश्तों के बारे में बात की गई। उपस्थित सभी व्यक्तियों से भविष्य के प्रयासों के लिए अपनी भागीदारी और समर्थन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) परियोजना के तहत "गंगा नदी में मछली संरक्षण और रैन्चिंग पर हितधारक परामर्श सह सलाहकार समापन कार्यशाला" का आयोजन किया

आईसीएआर-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर ने भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन.एम.सी.जी.) के तीन साल की परियोजना की उपलब्धि को संबोधित करने के लिए 26 सितंबर 2023 को एक दिवसीय समापन कार्यशाला "गंगा नदी में मछली संरक्षण और रैन्चिंग पर हितधारक परामर्श सह सलाहकार कार्यशाला" का आयोजन किया। आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक और एनएमसीजी के प्रमुख अन्वेषक डॉ. बसंत कुमार दास ने बैठक को संबोधित किया और परियोजना का एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत किया और इस परियोजना के तहत सिफ़री द्वारा किए गए रैन्चिंग कार्यक्रमों और प्रयासों के बारे में प्रकाश डाला। उन्होनें बताया कि वर्ष 2020-23 के दौरान 65 लाख से अधिक मछली के अंगुलिमीनों को पांच राज्यों अर्थात् उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में छोड़े गए। उन्होंने गंगा नदी में हाल ही में किए गए रैन्चिंग कार्यक्रम के प्रभाव को भी रेखांकित किया जिसके परिणामस्वरूप भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) की लैंडिंग में प्रयागराज में 24.70%, वाराणसी, उत्तर प्रदेश में 41.03% और पटना, बिहार में 25% से अधिक की वृद्धि हुई। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि जलीय जैव विविधता के संरक्षण और गंगा नदी में मछली के आवास की बहाली के लिए इस परियोजना के तहत 10 हजार मछुआरों को लगभग 140 जन जागरूकता कार्यक्रम में जागरूक किया गया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि परियोजना अवधि के दौरान 227 लाख भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) बीजों का प्रजनन और पालन किया गया। मछुआरों तक पहुंच कर इस परियोजना ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं और भारत सरकार ने देश भर में कई नदी रैन्चिंग कार्यक्रम शुरू किए हैं।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन.एम.सी.जी.) में जैव विविधता सलाहकार डॉ. संदीप बेहरा ने गंगा नदी के विभिन्न लुप्त हो चुके हिस्सों में रैन्चिंग कार्यक्रमों के माध्यम से मछली उत्पादन बढ़ाने और गंगा नदी की मूल मछली के संरक्षण के लिए सिफ़री के प्रयासों की सराहना की। आगे उन्होंने बताया है कि इस परियोजना ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं और इसके परिणाम सराहनीय हैं।स्थानीय मछुआरे समुदाय के बारह व्यक्ति भी इस कार्यशाला में उपस्थित थे और उन्होंने सिफ़री के प्रति आभार व्यक्त किया और इस पर अपने विचार साझा किए कि यह परियोजना आजीविका सृजन में कैसे मदद करती है। उन्होंने गंगा नदी में मछली पकड़ने के लिए जीरो मेश जाल और जहर के बड़े पैमाने पर प्रयोग पर भी चिंता व्यक्त की।

पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बीओबीपी, डब्ल्यूआईआई, मत्स्य पालन विभाग, पश्चिम बंगाल के विशेषज्ञ, आईसीएआर-सीआईएफई और आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिक और अनुसंधान विद्वानों ने कार्यशाला में भाग लिया और परियोजना के विभिन्न पहलुओं पर अपनी राय व्यक्त की और इस बात पर जोर दिया गया कि इस प्रकार के शोध से भारतीय नदियों की जैव विविधता का अध्ययन करने के लिए एक बड़ा डेटा तैयार होगा और नदी के पारिस्थितिकी तंत्र कार्य और पारिस्थितिक अखंडता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। सभी का मानना है कि इस तरह का हस्तक्षेप जैव विविधता हानि, जलवायु परिवर्तन और एसडीजी को संबोधित करने के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण है।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- बराक नदी की सहायक, चिरी नदी में पहली बार विदेशी वर्मीक्यूलेटेड सेलफिन कैटफ़िश टेरींगोलिक्थिस दिसजंकटिवस (Pterygoplichthys disjunctivus) की उपस्थिति देखी गई।
- कॉमन कार्प की दो प्रजातियां, साइप्रिनस कार्पियो (लेदर कार्प) और साइप्रिनस कार्पियो (अमूर कार्प) को पहली बार उमियम जलाशय, मेघालय में दर्ज किया गया।
- माइटोकॉन्ड्रियल CytB जीन का उपयोग करके देश की विभिन्न नदियों (गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, कृष्णा और कावेरी) की मूल दो व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछली प्रजातियों, एम. कैवसियस और एम. गुलियो का आनुवंशिक स्टॉक लक्षण वर्णन किया जाता है।
- मिरिक झील के सतही जल में संभावित विषैले तत्वों की सांद्रता का अध्ययन किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन 2008 के निर्धारित मान के अनुसार जल में विषैले तत्वों (मैंगनीज, निकेल, लेड, कॉपर, आयरन, क्रोमियम, कैडमियम, और जिंक) की सांद्रता मानक सीमा के भीतर पाई गई।
- अगस्त 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली की लैंडिंग 05.51 टन थी, जो अगस्त 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ने में 50% की कमी दर्शाती है।
- आंकड़ा संग्रह और विश्लेषण के लिए आरजीबी गणना -आधारित परिसीजन एल्गोरिदम के साथ "सीआर-डिटेक्टर" नामक छवि विश्लेषण सॉफ्टवेयर के साथ एक रास्पबेरी पाई आधारित वर्णमिति प्रोटोटाइप GEN 2.0 विकसित किया गया है।

- भारत और बांग्लादेश के बीच दो नदियों की मछली विविधता के लिए खोज की गई और कुलिक नदी से 62 और रिव नगर से 41 मछली प्रजातियों को दर्ज किया गया। रिपोर्ट किए गए 24 प्रजातियों में साइप्रिनिड, कोबिटिड लोचेस और बैग्रिड कैटफ़िश की प्रचुरता नदियों के इक्थिओफ़ौना प्रजातियों से अधिक पाए गए।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 2 सितंबर 2023 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में आयोजित विश्व बैंक वित्त पोषित परियोजना उत्तर प्रदेश कृषि विकास और ग्रामीण उद्यम पारिस्थितिकी तंत्र सुदृढ़ीकरण परियोजना (UPAGREES) के विशेषज्ञों की टीम के साथ एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 14-15 सितंबर 2023 को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर (National Agricultural Science Complex), नई दिल्ली में (मत्स्य विज्ञान) की अनुभागीय समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 16 सितंबर 2023 को आरसीए परिसर, उदयपुर, राजस्थान में आईडीपी-एनएएचईपी के तहत "कृषि शिक्षा मेले' में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक ने दिनांक 21 सितंबर 2023 को इंदौर में नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण में आयोजित सरदार सरोवर बांध के डाउनस्ट्रीम में नर्मदा नदी के ई-प्रवाह की समीक्षा की पहली बैठक में भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान ने दिनांक 15 सितंबर, 2023 को प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (पीएमएमएसवाई) के तीन सफल वर्षों के अवसर पर इंदौर में आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम में श्री परषोत्तम रूपाला, माननीय मंत्री, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी ने भाग लिया। साथ ही, संजीव बालियान और डॉ. एल. मुरुगन, माननीय राज्य मंत्री, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय; डॉ. अभिलाष लिखी, सचिव, मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार और डॉ. जे. के. जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने संस्थान के स्टॉल का दौरा किया और वैज्ञानिकों से बातचीत की।
- संस्थान में दिनांक 5-11 सितंबर, 2023 के दौरान शेखपुरा, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें शेखपुरा जिले के 30 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 13 सितंबर, 2023 को पश्चिम बंगाल प्राणी एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के 5 पीएच.डी. छात्रों के लिए आर्कजीआईएस (ArcGIS) सॉफ्टवेयर के उपयोग और संचालन पर एक दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित की गई।
- संस्थान में दिनांक 18-22 सितंबर, 2023 तक पाकुड़, झारखंड के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 5 दिवसीय आतमा योजना प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 22 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 9 सितंबर 2023 को बालागढ़, हुगली, पश्चिम बंगाल में ग्रामीण महिलाओं की आजीविका बढ़ाने के लिए सजावटी मत्स्य पालन पर जागरूकता-सह-क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया, कार्यक्रम में 50 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान द्वारा झारखंड के पगला घाट, राजनगर घाट और कमालतीपुर मछली घाट पर 3 हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। जागरूकता कार्यक्रमों के दौरान 41 मछुआरों की सक्रिय भागीदारी देखी गई और अधिकतम मछुआरे अनुसूचित जाति समुदाय के थे।

अन्य

- दिनांक 8 सितंबर 2023 को डलमऊ, रायबरेली, उत्तर प्रदेश में एक लाख भारतीय मेजर कार्प के अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया। इस अवसर पर श्रीमती निर्मला पासवान, माननीय सदस्या, विधान परिषद, उ.प्र. और डॉ. यू.के. सरकार, निदेशक, आईसीएआर-एनबीएफजीआर, लखनऊ उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में लगभग 100 लोगों ने भाग लिया।
- सितंबर 2023 के दौरान पश्चिम बंगाल में फरक्का के ऊपरी प्रवाह में हिल्सा संरक्षण के लिए 472 हिल्सा मछली को छोड़ गया, जिनमें से 29 वयस्क मछलियों को सितंबर 2023 तक अभिगमन प्रकृति को समझने के लिए टैग किया गया था।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

পুরুলিয়ায় জলাধারে মৎস্য চাষের উন্নতিতে সাহায্য কেন্দ্রীয় সংস্থার

জয়প্রকাশ কুইরি ● পুরুলিয়া

बदलाव › हजारीबाग जिला में एकमात्र महझींगा मछली पालन केंद्र केरेडारी घाघरा जलाशय डैम बना
नक्सलियों की जहां गरजती थी, बंदूके अब वहां हो रहा मछली का व्यापार

मत्स्य निदेशालय की सराहनीय पहल
झारखंड के जलाशयों में महाझींगा संचयन से जनजातीय समुदायों की आजीविका में सुधार संबंधी परियोजना का शुभारंभ

केरेडारी में आदिवासी समुदायों के आजीविका में सुधार के लिए
एकमात्र महझींगा मछली पालन... बना केरेडारी घाघरा जलाशय...

Capacity building program for fish farmers of Pakur, Jharkhand : ICAR-CIFRI initiative

Ranchi,(KCN): With the increasing demand of the blue economy and to achieve the doubling of farmers' income, government is sponsoring training cum skill enhancement programs for the fishermen through various schemes like ATMA. In this regard, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore organized an ATMA-sponsored 5-day training programme on "Inland Fisheries Management" for the fish farmers of Pakur, Jharkhand from 18 – 22nd September, 2023. A total of 21 farmers including a group of 6 women and one fisheries instructor from Pakur district have participated in the training programme. Pakur district of centrally located Jharkhand State is covered with forest and with hilly terrains. According to the district portal, this district is blessed with two dams and numerous small waterbodies like ponds and tanks. This training was conducted to enhance farmers' knowledge on scientific fish farming. The trainees were taught various aspects of fish farming such as pond construction and management, Natural fish food organisms in inland open waters, fish health management, fish feed preparation, composite fish culture, Ornamental fish culture etc. Besides, the trainees were given a demonstration cum practical orientation on the Ornamental fish culture, fish feed preparation, monitoring of some basic water quality and identification of some disease-causing fish pathogens during this training. The trainees were also sensitized with some basic knowledge of reservoir fisheries management, enclosure culture and Pangus culture in the reservoir as Pakur district is also blessed with two. In addition, a field trip was organized as part of the training program to East Kolkata Wetland and ICAR-CIFE, Kolkata Research Centre. During the training program, the Institute's director Dr. B. K. Das interacted with the farmers and encouraged them to develop their knowledge through the training. Dr. Das emphasized utilizing the underused water resources including backyard ponds through fisheries for livelihood improvement. The program has been oriented to strengthen the practical skills of the farmers for enhancing fish production in open waters including ponds & tanks, through on-field exposure visits and field demonstrations besides classroom sessions. About 86% of the the trainees expressed high level of satisfaction from the capacity building programme.

Swachhata Hi Seva Activities in West Bengal

ছো নাচের পুরুলিয়া

কৃষি অনুসন্ধান পরিষদ ও কেন্দ্রীয় অন্তর্দেশীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থার উপজাতীয় সম্প্রদায়ের উন্নতির জন্য পথ চলা শুরু

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है